ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–६४
दिनांक– शुक्रवार, १० दिसम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 27.7 एवं 13.8 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 57 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 16.6 एवं दोपहर में 26.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(11–15 दिसम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 11–15 दिसम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्का कुहासा देखे जा सकते है।
- अधिकतम तापमान २४–२६ डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। न्यूनतम तापमान में पूर्वानुमानित अवधि में २–३ डिग्री सेल्सियस की गिरावट आ सकती है जिसके चलते यह ६–११ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 6–12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 70 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 50 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई करें। इसके लिए एच०यू०डब्लू० २३४, डब्लू०आर० ५४४, राजेंद्र गेहूं-१ एच० आई० १५६३, डी०बी०डब्लू० १४, एच०डी० २९६७ तथा एच०डब्लू० २०४५ किस्में इस क्षेत्र के लिए अनुशसित हैं। प्रति किलोग्राम बीज को २.५ ग्राम बेबीस्टीन की दर से पहले उपचारित करें। पुनः बीज को क्लोरपायरिफॉस २० ई०सी० दवा का ८ मि०ली० प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बुआई के पूर्व खेत की जुताई में ४० किलोग्राम नेत्रजन, ४० किलोग्राम फॉसफोरस एवं २० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर डालें। जिन क्षेत्रों में फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देती हो वैसे क्षेत्रों के किसान खेत की अन्तिम जुताई में जिंक सल्फेट २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर १५० किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए १२५ किलोग्राम बीज का व्यवहार करें। बुआई पूर्व खेतों की हल्की सिंचाई अवश्य करें ताकि बीजों का समुचित जमाव सुनिश्चित हो सके।
- अगात बोयी गयी मक्का की फसल में निकौनी एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आलू में निकौनी कर मिट्टी चढ़ाने एवं सिंचाई की सलाह दी जाती है।
- चना की बुआई अतिशीघ्र सम्पन्न करने का प्रयास करें। चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-२५६, के०पी०जी०-५६(उदय), के०डब्लू०आर० १०८, पंत जी १८६ एवं पूसा ३७२ अनुशंसित हैं। बीज को बेबीस्टीन २.५ ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। २४ घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस ८ मि०ली० प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें। पुनः ४ से ५ घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्वर (पॉच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें।
- गेहुँ की फसल जो २१-२५ दिनों की हो गई हो, में हल्की सिंचाई करें। सिंचाई के १-२ दिनों बाद प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। गेहूँ की फसल में यदि दीमक का प्रकोप दिखाई दें तो बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई० सी० २ लीटर प्रति एकड़ २०-२५ किलोग्रम बालू में मिलाकर खेत में सिंचाई से पहले छिड़क दें।
- गेहूँ की फसल में खर-पतवार नियंत्रण की सबसे उपयुक्त अवस्था बोआई के ३० से ३५ दिनों बाद होती है। गेहूँ में उगने वाले सभी प्रकार के खरपतवार के नियंत्रन हेतु पहली सिंचाई के बाद सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। ध्यान रहें छिड़काव के वक्त खेत में प्रयाप्त नमी हों।
- आलू की फसल में निकौनी करें। निकौनी के बाद नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर आलू में मिट्‌टी मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आलू में कीट-व्याधी की निगरानी करें।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू फल में घुसकर अन्दर से खाकर पूरी तरह फल को नष्ट कर देते हैं, जिससे प्रभावित फलों की बढ़वार रुक जाती है और वे खाने लायक नहीं रहते, पूरी फसल बरबाद हो जाती है। फल छेदक कीट से बचाव हेतु खेतों में पक्षी बसेरा लगायें। कीट का प्रकोप दिखाई देने पर सर्वप्रथम कीट से क्षतिग्रस्त फलों की तुराई कर नष्ट कर दें एवं उसके बाद स्पीनेसेड ४८ ई०सी०/ १ मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। सब्जियों वाली फसल में निकौनी करें।
- पिछात गोभी वर्गीय सब्जियों में गोभी की तितली/छिद्रक कीट/पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू गोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिरवाले भाग को अधिक क्षति पहुँचाती हैं। शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियो को खाता है। इन कीटों से बचाव हेतु डाइमेथोएट ३० ई०सी० का १.० मि०ली० प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर पौधों पर समान रुप से छिड़काव करें।
- प्याज के ५०-५५ दिनों के तैयार पौध की रोपाई करे। इसके लिए खेत को समतल कर छोटी-छोटी क्यारियाँ बनावें। क्यारियों का आकार, चौड़ाई १.५ से २.० मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार ३-५ मीटर रखे। प्रत्येक दो क्यारियों के बीच जल निकासी के लिए नाले अवश्य बनावें। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करे। खेत की तैयारी में १५ से २० टन गोबर की खाद, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ८० किलोग्राम फॉसफोरस, ८० किलोग्राम पोटास तथा ४० किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करें। पिछात प्याज की पौधशाला से खरपतवार निकाल कर हल्की सिंचाई करें।

आज का अधिकतम तापमानः 26.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 12.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.8 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी